82

अंतिम तैयारियां

बाइबल पाठ #35

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।

ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।

1. अन्तिम भोज (क्रमश:)।

च. प्रेरितों को प्रोत्साहित किया गया और चेतावनी दी गई (यूहन्ना 14:1-16:33)।

छ. पिता से प्रार्थना की गई (यूहन्ना 17:1-26)।

परिचय

अपने परिवार के साथ दस वर्ष तक ऑस्ट्रेलिया में ग्रेटर सिडनी नामक स्थान पर मैक्वेरी की मण्डली के साथ काम करने के बाद नवम्बर 1977 में, मैं अमेरिका वापस जाने की तैयारी कर रहा था।[1] यह समय बहुत ही भाग-दौड़ वाला था, जिसमें हमें बहुत सा काम पूरा करना था और बहुत सी तैयारियां करनी थीं! यह आंसुओं भरा समय था: हम परिवार तथा पुराने मित्रों के साथ फिर से मिलने की राह देख रहे थे, परन्तु नये मित्रों से बिछुड़ने पर हम उदास भी थे, जो हमारे बहुत करीब आ गए थे। यह चिंता का समय था, क्योंकि मण्डली के कई लोग नये मसीही थे और हमें उनकी आत्मिक भलाई की चिंता थी। इन दिनों सिखाने, योजना बनाने और प्रार्थना करने में बहुत सा समय बीता।

तुलना सम्पूर्ण से बहुत दूर होती है, परन्तु हमारी स्थिति कुछ-कुछ मृत्यु के निकट आने पर यीशु की स्थिति के जैसी है। जिन आयतों का हम अध्ययन करेंगे, उनमें उसने अपने चेलों पर ज़ोर देकर कहा कि उसके जाने का समय आ पहुंचा है (यूहन्ना 14:2, 3, 12, 19, 28, 30; 16:7, 16, 28; 17:1, 13; देखें 13:33)। एक अर्थ में यूहन्ना 14-17 में यीशु को ''अंतिम तैयारियां'' करते हुए दिखाया गया है। इन अध्यायों का आरम्भ प्रेरितों को ''महान विदाई संदेश'' देने के साथ (अध्याय 14-16) और अन्त उनके लिए प्रभु की प्रार्थना के साथ होता है (अध्याय 17)।

मैं मानता हूं कि यूहन्ना 14-17 को समझना आसान नहीं है। यह यूहन्ना की पुस्तक के सबसे बड़े खण्डों में से एक है, जिसमें बहुत सी महान आयतें हैं। एच. आई. हेस्टर ने इन अध्यायों को ''मसीही विश्वास के सबसे बड़े भण्डारों में से एक'' कहा है।[2] जॉन एफ़. कार्टर ने कहा है, ''इन बहुमूल्य वचनों में ... प्रिय शिष्य ने हमें प्रभु यीशु के भावनात्मक जीवन को दिखाया है, जो सुसमाचार की पुस्तकों में और कहीं नहीं मिलता।''[3] एफ़. लेगर्ड

स्मिथ ने लिखा है, ''यीशु के कहे हर शब्द से उस बोझ की झलक मिलती है, जो वह इन लोगों के उसके द्वारा आरम्भ किए गए काम को पूरा करने के लिए छोड़ने में महसूस करता है।''[4]

इस पाठ में मैं आपको केवल इन महान अध्यायों का परिचय ही दे सकता हूं। फिर आप उन पर ध्यान देते हुए और उनकी सच्चाइयों से आशीषित होते हुए जीवन बिता सकते हैं। एक-एक आयत का अध्ययन करने के बजाय या एक-एक खण्ड पर विचार करने के बजाय मैं उनमें से कुछ विषयों की झलकियां दूंगा। यात्रा की तैयारी के लिए किए जाने वाले आवश्यक प्रबन्धों पर ध्यान देकर मैं ऐसा करूंगा। मैं अपने परिवार के ऑस्ट्रेलिया से जाने और यीशु के इस संसार से जाने में तुलना करने का सुझाव दूंगा।

यूहन्ना 14-17 की समीक्षा करते हुए, ध्यान रखें कि यीशु सबसे पहले अपने प्रेरितों को सम्बोधित कर रहा था। कई आयतों की सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है, पर हमें चाहिए कि उन्हीं लोगों से की गई प्रतिज्ञाओं का दावा न करने में चौकस रहें (उदाहरण के लिए, 14:26)।

सहानुभूतिपूर्वक प्रोत्साहन

विदाई सबके लिए कठिन होती है। मसीह से जाने की बात सुनकर, चेले उदास हो गए थे (यूहन्ना 16:6)। इसलिए ''महान विदाई संदेश'' का आरम्भ प्रोत्साहन के शब्दों ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं'' के साथ होता है (14:1क)। बाद में यीशु ने कहा, ''अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता:[5] तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (यूहन्ना 14:27; देखें 16:33)। यह संदेश सांत्वना और सामर्थ देने के वचनों से भरा है। प्रभु ने अपने प्रेरितों को प्रेम का आश्वासन दिया (15:9, 12) और उन्हें ''मित्र'' कहा (15:15)। उसने प्रतिज्ञा की कि यद्यपि उस समय वे उदास थे, परन्तु उनका शोक आनन्द में बदल जाना था (16:20-22; देखें 15:11)।

प्रोत्साहन की ये बातें कहते हुए यीशु जानता था कि उसके पास केवल कुछ ही घण्टे बचे हैं (देखें 14:30; 16:20, 32; 17:1)। तौ भी उसका ध्यान अपने प्रेरितों पर था। प्रभु का नि:स्वार्थपन और दूसरों के लिए ध्यान मुझे प्रेरणा देता है।

गम्भीर व्याख्या

जाने की कोई घोषणा किए जाने पर अक्सर यह सवाल पूछा जाता है, ''आप क्यों जा रहे हैं?'' हमसे यही प्रश्न पूछा गया था, सो हमने अपने कारण बता दिए। लड़कियां बड़ी हो चुकी थीं और हम चाहते थे कि उन्हें मसीही विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाए; मेरी पत्नी की मां अस्सी वर्ष के करीब थी और हमें लगा कि उसके अन्तिम वर्षों में हमें उसके पास होना चाहिए।[6]

मसीह ने भी अपने चेलों को बताया कि उसका जाना आवश्यक क्यों था। पहली बात तो यह कि पहले से योजना थी कि पृथ्वी पर आने के बाद वह अपने पिता के पास लौट जाएगा (14:28; 16:5, 28)। तब उसे पहले वाली महिमा फिर से मिल जानी थी

(17:5)। यीशु ने चेलों को बताया, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं'' (यूहन्ना 14:28)।

परन्तु मसीह ने मुख्यतया इस बात पर ज़ोर दिया कि उसका जाना प्रेरितों के लिए कैसे लाभदायक होना था। उसने उन्हें बताया, ''मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं'' (यूहन्ना 14:2)। इसके अलावा उसने अपने चेलों को बताया कि पृथ्वी पर रहकर वह उनके लिए उतना कुछ नहीं कर सकता, जितना वह परमेश्वर के दाहिने हाथ होने पर कर सकता है। यह उसने *उसके नाम में* प्रार्थना किए जाने की बात कहकर किया। तब तक, प्रार्थना यीशु के नाम में नहीं की जाती थी (यूहन्ना 16:24); परन्तु पिता के पास उसके लौट जाने के बाद, उसने उनका मध्यस्थ बनना था (1 तीमुथियुस 2:5); उसने अपने अनुयायियों के लिए निवेदन करना था (रोमियों 8:34; इब्रानियों 7:25; 9:24; 1 यूहन्ना 2:1)। उसने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में, वे *उसके नाम में* जो भी मांगें, वह उन्हें दिया जाएगा[7] (यूहन्ना 14:13, 14; 15:16; 16:23, 24)।

अपने जाने का कारण समझाते हुए, यीशु का *मुख्य* विचार यह था कि उसका जाना आवश्यक था, ताकि पवित्र आत्मा आ सके। उसने कहा, ''तौ भी मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा;[8] परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा'' (16:7)। कुछ आयतों के बाद, मसीह ने इस ''सहायक'' को ''आत्मा'' बताया (16:13)। तीन वर्ष पूर्व, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कहा था कि मैं तो पानी में बपतिस्मा देता हूं, परन्तु मसीहा पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देगा (मरकुस 1:8)। पवित्र आत्मा का वह बपतिस्मा दो से भी कम महीनों में दिया जाना था (प्रेरितों 1:5, 8; 2:1-4, 33)। इसलिए यीशु ने सोचा कि उसके प्रेरितों को पहले से पता होना चाहिए कि आत्मा के साथ उनका नया सम्बन्ध क्या होगा। पवित्र आत्मा के काम के बारे में सुसमाचार की शेष सभी पुस्तकों से यूहन्ना 14-17 में सबसे अधिक बताया गया है।

आत्मा के भेजे जाने को इस पाठ में अलग भाग बनाया जाना चाहिए (अगला मुख्य विभाजन देखें), परन्तु अभी केवल यूहन्ना 16:7 से ये शब्द फिर पढ़ें: ''मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है।'' इसे यूहन्ना 14:12 में मसीह की अद्‌भुत प्रतिज्ञा के साथ जोड़ा जा सकता है: ''... जो मुझ पर विश्वास करता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन *इनसे भी बड़े काम* करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।'' प्रेरितों ने *गुण* में यीशु से बड़े काम (आश्चर्यकर्म) नहीं किए,[9] परन्तु *गिनती* में उन्होंने उससे बड़े काम किए हो सकते हैं (देखें प्रेरितों 5:12)।[10] उन्होंने ये काम आत्मा की सामर्थ से किए (देखें प्रेरितों 1:8; रोमियों 15:19)। मसीह ने ज़ोर देकर कहा कि उसके जाने से यह सम्भव होना था।

सामर्थ देने वाली सांत्वना

ऑस्ट्रेलिया से जाने से पहले हम मैक्वेरी की मण्डली को यह बताकर प्रोत्साहित कर पाए थे कि हमारी जगह कोई और उनके साथ होगा: डेल और शीला हार्टमैन अपने परिवार

के साथ शीघ्र ही वहां आने वाले थे। इसी प्रकार, यीशु ने अपने चेलों को आश्वस्त किया कि वह उन्हें ''अनाथ'' (यूहन्ना 14:18) नहीं छोड़ रहा था, क्योंकि अपनी जगह वह किसी और को, यानी पवित्र आत्मा को भेज रहा था। उसने कहा, ''मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे'' (यूहन्ना 14:16)। यीशु उनका सहायक रहा था, परन्तु अब उसने *एक और* सहायक अर्थात आत्मा को भेजना था। मसीह उनके साथ केवल तीन वर्ष तक रहा था, पर नये सहायक ने उनके साथ ''सदा'' तक रहना था।[11]

पवित्र आत्मा उसी का भाग है, जिसे बाइबल में ''ईश्वरत्व'' ''परमेश्वरत्व'' और KJV में ''God head'' कहा गया है (प्रेरितों 17:29; रोमियों 1:20; कुलुस्सियों 2:9)।[12] वह ''त्रिएकता''[13] जिसमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं (मत्ती 28:19), में से एक है। यूहन्ना 14:16 में तीनों को अलग-अलग व्यक्तित्व के रूप में दिखाया गया है: ''मैं [पुत्र] पिता से विनती करूंगा, और वह [पिता] तुम्हें एक सहायक [पवित्र आत्मा] देगा।'' बहुत से लोगों के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व का सबसे रहस्यात्मक जन है। पिता स्वयं आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और वह पवित्र है (1 पतरस 1:15)। इसलिए पिता के बारे में आपकी जो भी अवधारणा है, उस समझ को पवित्र आत्मा में बदल दें और आप अधिक गलत नहीं होंगे।

परमेश्वरत्व के तीनों लोग स्वभाव तथा सामर्थ में समान हैं, परन्तु स्पष्टतया श्रम और ज़िम्मेदारी तीनों में कुछ भिन्नता है। उदाहरण के लिए पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र लिखने की प्रेरणा देने का काम किया है (2 पतरस 1:21; देखें मरकुस 12:36; प्रेरितों 1:16; 4:25)। यूहन्ना 14-16 आरम्भिक कलीसिया में उसके काम के बारे में बताता है। इन अध्यायों की मुख्य आयतों पर विचार करना लाभदायक है।

यूहन्ना 14:16, 17क: जैसा कि पहले देखा गया है, यीशु ने प्रेरितों को बताया कि वह उन्हें ''एक और सहायक'' देगा। यूनानी शब्द ''पैराक्लेट'' (*parakletos*)[14] का अनुवाद ''सहायक'' जो ''के साथ'' (*para*) का अर्थ देने वाले उपसर्ग के साथ ''बुलाना'' (*kaleo*) के लिए शब्द का संज्ञा रूप है। यह सहायता के लिए ''साथ बुलाए जाने वाले'' के लिए है। अंग्रेज़ी के अनुवादों में इस यूनानी शब्द के अलग-अलग अर्थ मिलते हैं, जिनका अनुवाद अलग-अलग है "helper" (NASB, NKJV), "Comforter" (KJV), "Counselor" (NIV, RSV), and "Advocate" (NRSV).[15] मसीह ने इस सहायक/ सांत्वना देने वाले/सलाहकार/ वकील को ''सच्चाई का आत्मा'' कहा। उसे इन नामों से इसलिए लिखा गया है, क्योंकि वह सारी सच्चाई प्रकट करता और केवल सच्चाई ही बताता है (14:26; देखें 17:17)।

यूहन्ना 14:17ख: संसार (अर्थात संसार का प्रबन्ध जिसने मसीह को ग्रहण करने से इनकार कर दिया) आत्मा को देखने, जानने और ग्रहण करने में सक्षम नहीं था। दूसरी ओर, प्रेरित अपने विश्वास तथा विश्वासयोग्यता के कारण योग्य थे। कालांतर में, पवित्र आत्मा उनके *साथ* था।[16] थोड़ी देर बाद, उसने उन *में* होना था।[17] इस प्रतिज्ञा का पूरा होना पचास दिन बाद, यहूदियों के पिन्तेकुस्त के पर्व पर हुआ (प्रेरितों 2:1-4, 33)।

यूहन्ना 14:26: यीशु ने चेलों को कई बातें सिखाई थीं, परन्तु उसे मालूम था कि चेलों को उसकी अधिकांश बातें याद नहीं थीं। उन्हें और ज्ञान भी चाहिए था; परन्तु इसमें से कुछ बातें बताने का अभी उसके पास समय नहीं था (14:30), और कुछ बातें वे अभी सहार नहीं सकते थे (16:12)। पवित्र आत्मा ने आकर प्रेरितों पर वे सब बातें प्रकट कर देनी थीं, जो परमेश्वर उन्हें बताना चाहता था। इस प्रकट करने में उन्हें मसीह की सिखाई गई बातें याद दिलाना भी शामिल था।

यूहन्ना 15:26: पवित्र आत्मा का मुख्य काम यीशु की गवाही देना होना था (देखें 16:14)। जैसे सूर्य पृथ्वी को प्रकाशमान करता है, वैसे ही पवित्र आत्मा के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य मसीह और सुसमाचार को ऊंचा करना था (और है) (देखें 1 कुरिन्थियों 2:2; 15:1-4)।[18]

यूहन्ना 16:7-14: पवित्र आत्मा ने आकर अविश्वासी *संसार* के लिए और *प्रेरितों* के लिए कुछ और काम करना था: (1) उसने ''संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर'' करना था। पवित्र आत्मा ने संसार के राजमार्गों तथा उपमार्गों में भूतों की तरह मंडराकर ''संसार को निरुत्तर'' नहीं करना था।[19] उसने तो अपनी प्रेरणा से दिए गए वचन के द्वारा पापियों को दोषी ठहराना था (17:20)। (2) उसने केवल वही बातें कहकर जो पिता ने उसे बतानी थीं, ''सब सत्य'' में प्रेरितों की अगुआई करनी थी।[20] प्रेरितों पर प्रकट किए गए ''सब सत्य'' को लिख दिया गया[21] और आज यह हमारे पास नये नियम के पन्नों में उपलब्ध है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रकाशन सम्पूर्ण है; अतिरिक्त प्रकाशन की कोई आवश्यकता नहीं है (देखें यहूदा 3; 2 पतरस 1:3; गलातियों 1:6-9)।

संतुष्ट करने वाला आश्वासन

ऑस्ट्रेलिया से निकलते समय, मैक्वेरी के सदस्यों को यह बताने के अलावा कि हमारी जगह आने वाले लोग पहुंचने ही वाले थे, हम ने उन्हें आश्वासन दिया कि हम उनसे मिलेंगे। इस जीवन में नहीं तो अगले में। कुछ वर्षों बाद हम फिर पहली बार ऑस्ट्रेलिया वापस गए और अपने बहुत से मित्रों से मिलकर आनन्दित हुए। चेलों को अपने जाने के लिए तैयार करते हुए यीशु ने प्रतिज्ञा की, कि वह फिर उनके साथ होगा (उदाहरण के लिए, देखें यूहन्ना 14:3; 16:22)। यूहन्ना 14-16 में मसीह ने कम से कम तीन अर्थों में प्रेरितों को अपने वापस आने के बारे में बताया:[22]

- अपने पुनरुत्थान के बाद, उसने स्वर्गारोहरण से पहले चालीस दिन तक उनके साथ होना था। यह तथ्य 16:16-22 में मुख्य लगता है।[23]
- अपने पुनरुत्थान के बाद, उसने आत्मिक रूप से अपने चेलों के साथ होना था (मत्ती 18:20; 28:20)। यीशु ने इस सच्चाई को आत्मा के आने के साथ जोड़ दिया (यूहन्ना 14:18, 23)। पवित्र आत्मा को ''मसीह का आत्मा'' भी कहा गया (रोमियों 8:9; फिलिप्पियों 1:19; 1 पतरस 1:11) है।

- एक दिन, वह अपने लोगों को लेने के लिए वापस आएगा (द्वितीय आगमन पर)। यह प्रतिज्ञा यूहन्ना 14:3 में यीशु के मन में सबसे पहले थी।

महत्वपूर्ण निर्देश

ऑस्ट्रेलिया से जाने के लिए तैयार होकर मैंने प्रार्थनापूर्वक इस प्रश्न पर विचार किया: ''मैं अपने भाइयों और बहनों के लिए क्या निर्देश छोड़कर जाऊं?'' पता नहीं कि किसी को याद हो या नहीं कि मैंने क्या कहा था, पर मैंने सार्थक संदेश देने का प्रयास किया था। यीशु अपनी मृत्यु से पूर्व की इस रात अपने चेलों को कई सच्चाइयां बताना चाहता था। उसकी अधिकतर बातों को दो भागों में बांटा जा सकता है। उसके कहने का क्या अभिप्राय था:

(1) *''तुम्हें मेरे साथ एक सही सम्बन्ध बनाए रखना होगा।''* यूहन्ना 15 अध्याय का आरम्भ दाखलता और डालियों के रूपक से होता है।[24] मसीह ने अपने चेलों को बताया, ''मैं दाखलता हूं,[25] तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (आयत 5)। जैसे डालियों में दाखलता से जीवनदायक चीज़ें निकलती हैं, वैसे ही हमें आत्मिक जीवन प्रभु में बने रहने से मिलता है। अपने मन में यीशु के शब्द रेखांकित कर लें: ''मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।'' मसीह से अलग होकर, हम कुछ नहीं कर सकते; उससे अलग होकर, हम थोड़ा सा भी नहीं कर सकते; यीशु से अलग होकर, हम *कुछ नहीं* कर सकते। हमारा उसके साथ बने रहना आवश्यक है। मसीह को मालूम था कि उसके अनुयायी कितनी आसानी से बिखर सकते हैं (16:32; देखें मत्ती 26:31)। उसने उनसे उसमें और उसके प्रेम में बने रहने के लिए कहा (यूहन्ना 15:4-7, 9, 10)। हमारे बाइबल पाठ में, उसने अपने साथ सही सम्बन्ध बनाए रखने पर दो व्यावहारिक सुझाव दिए।

उसने संकेत दिया कि हमें *अपने विश्वास को दृढ़ करना* आवश्यक है। यूहन्ना 14 का आरम्भ विश्वास पर ज़ोर देने के साथ होता है: ''... तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो'' (आयत 1)।[26] थोड़ा बाद में, यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (14:6)। फिर उसने यह दावा किया, ''जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है'' (14:9)। क्या हम इन महान सच्चाइयों पर विश्वास करते हैं? यदि हम प्रभु के साथ सही सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं, तो दृढ़ विश्वास का कोई विकल्प नहीं है।[27]

उसने यह भी कहा कि उसके अनुयायी *उसके वचन का भण्डार* होने चाहिए। मसीह में विश्वास को उसके वचन से अलग नहीं किया जा सकता। विश्वास उसी वचन से आता है (17:20; देखें रोमियों 10:17)। यीशु ने ज्ञान के महत्व तथा वचन की बात मानने पर ज़ोर दिया। उसने अपने चेलों को बताया, ''यदि ... मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा'' (15:7)। फिर, उसने कहा, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा'' (14:23; देखें 14:15, 24; 15:10, 14)। उसने स्पष्ट निर्देश दिए कि उसके अनुयायियों को क्या करना है। उदाहरण के लिए, हमारे जीवन का फलदायक होना

(15:8, 16)[28] और अपने विश्वास को दूसरों को बताना आवश्यक है।[29]

(2) *''एक-दूसरे के साथ सही सम्बन्ध बनाए रखना आवश्यक है।''* प्रभु के साथ सही सम्बन्ध बनाए रखने के लिए, हमें एक-दूसरे के साथ भी सही सम्बन्ध बनाए रखना आवश्यक है (देखें 1 यूहन्ना 4:20)। प्रेरित बंट गए थे (लूका 22:24); बुराई का सामना वे केवल एकजुट रहकर कर सकते थे (17:11; 17:20-23 भी देखें)।

एकता की कुंजी *प्रेम* है। यीशु ने अपने अन्तिम संदेश में प्रेम के बारे में बहुत कुछ कहना था: परमेश्वर ने उससे प्रेम रखा (15:9), उसने परमेश्वर से प्रेम रखा (14:31), यीशु ने चेलों से प्रेम रखा (15:9, 12), उन्हें उससे प्रेम रखना था (14:15, 21, 23, 28)। उन्हें एक-दूसरे से भी प्रेम रखना था। उसने उन्हें पहले ही एक-दूसरे से ऐसा प्रेम रखने की चुनौती दी थी, जैसा उसने उनसे रखा था (13:34)। अब उसने दोहराया, ''मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रेम रखो'' (15:12; 15:17 भी देखें)। उसकी तरह प्रेम रखने के अर्थ में किसी प्रकार की ना समझी से बचाने के लिए, उसने कहा, ''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे''[30] (15:13)। थोड़ी देर बाद ही उसने क्रूस पर उनके लिए अपना प्राण दे देना था।

गम्भीर चेतावनियां

ऑस्ट्रेलिया से हमारे जाने का समय निकट आने पर, मैंने अपने जाने के बाद किसी प्रकार की सम्भावित बुराई पर विचार करने का प्रयास किया। मैं भविष्य को नहीं जान पाया, सो बाद में ऐसी समस्याएं खड़ी हुईं, जिन पर हमने पहले विचार नहीं किया था, पर कम से कम मैंने मण्डली को तैयार करने की कोशिश अवश्य की। यीशु भविष्य में देख *सकता* था, इसलिए उसने अपने चेलों को स्पष्ट चेतावनियां दीं। उसने उस सताव की ओर विशेष ध्यान दिया था, जो उसके अनुयायियों पर आने वाला था। अभी तक, संसार की घृणा उस पर ही केन्द्रित थी (15:18, 24); परन्तु उसके जाने के बाद यह घृणा उसके चेलों से की जानी थी (15:20; देखें 17:14-18)। उसने प्रेरितों को चौकस किया, ''वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं''[31] (यूहन्ना 16:2)। यह सब उसने उन्हें परीक्षाओं के आने पर ''ठोकर से'' बचाने के लिए पहले से बता दिया (16:1; देखें आयत 4)। उसने उत्साह की यह बात भी जोड़ी: ''संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है'' (16:33)।

निःस्वार्थ निवेदन

ऑस्ट्रेलिया में अपनी अंतिम घड़ियों में हमने प्रार्थना की कि परमेश्वर हमारे भाइयों और बहनों के साथ रहे। आज भी ''रब्ब साथ होवे, जब हम जुदा हों''[32] गीत गाते समय मेरी पत्नी की आंखों से आंसू टपकने लगते हैं। यीशु ने चेलों के साथ अपनी इस बैठक को यूहन्ना 17 में मिलने वाली, मन को छू लेने वाली प्रार्थना के साथ समाप्त किया। रॉबर्ट

कल्वर ने इस प्रार्थना को ''मानवीय इतिहास में स्वर्ग के साथ पृथ्वी का सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध'' कहा है।[33] वारेन वियर्सबे ने लिखा है, ''यूहन्ना 17 ... सुसमाचार की पुस्तक का 'परम पवित्र स्थान' है।... पापियों के लिए छुटकारे के रूप में अपना प्राण देते हुए परमेश्वर पुत्र के अपने पिता के साथ बात करने को सुनने की हमें विशेष आशीष मिली है!''[34]

यूहन्ना 17 अध्याय की प्रार्थना तीन भागों में है। पहले, यीशु ने अपने पिता के साथ सम्बन्ध के बारे में प्रार्थना की (आयतें 1-5)। अपने लिए उसने केवल यही मांगा कि उसे महिमा मिले (आयतें 1, 5; देखें आयत 24; 12:23, 24, 27, 28)। दूसरा, मसीह ने प्रेरितों के लिए प्रार्थना की (17:6-19; आयतें 24-26 भी देखें)। उसने उन्हें सुरक्षित रखने (आयतें 11, 15), उन्हें पवित्र करने (आयत 19) और उनसे प्रेम रखने के लिए कहा (आयत 26)। अंत में यीशु ने उनके लिए प्रार्थना की, जिन्होंने प्रेरितों का वचन सुनकर विश्वास लाना था (आयतें 20-23)। अन्य शब्दों में, उसने आपके और मेरे लिए प्रार्थना की। कितना अद्‌भुत विचार है! उसने प्रार्थना की कि विश्वास लाने वाले ''एक हों'' ताकि संसार उसे ग्रहण कर सके (आयतें 21, 23)। संसार में सुसमाचार प्रचार के लिए मसीह से सम्बन्ध होने का दावा करने वालों में फूट होने से बड़ी रुकावट और कोई नहीं है।

सारांश

यीशु के ''अंतिम तैयारियों'' के अन्य पहलुओं की बात की जा सकती है। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया से जाने की तैयारी करते हुए हमारे परिवार के लोगों और मित्रों ने फोटो और अन्य स्मरण एक-दूसरे को दिए, ताकि हम एक-दूसरे को भूल न जाएं। मसीह ने प्रभु-भोज की स्थापना कर कुछ ऐसा ही किया (लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24, 25)।

नोट्स

यूहन्ना 14-17 को समझने का एक और ढंग प्रेम, आज्ञाकारिता, फल लाने, पवित्र आत्मा तथा संसार के साथ हमारे सम्बन्ध, जैसे विभिन्न विषयों पर इन आयतों को बांटना होगा। एक सम्भावित शीर्षक ''ऊपरी कमरे का संदेश'' हो सकता है। इसकी मुख्य बातें ''प्रेम का संदेश,'' ''आज्ञाकारिता का संदेश,'' और ऐसे कई शीर्षक हो सकते हैं। इन अध्यायों के लिए एक और शीर्षक ''उसने अंत तक उनसे प्रेम रखा'' हो सकता (देखें यूहन्ना 13:1) है। यदि इस ढंग का इस्तेमाल किया जाए, तो उन मूल्यवान क्षणों में यीशु के काम अपने चेलों के लिए उसके प्रेम को दिखाने के लिए इस्तेमाल करें। आप ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो'' (14:1) पर अध्याय में दी गई सांत्वना पर आयतों को दिखाते हुए प्रचार कर सकते हैं।

यूहन्ना 14-17 के प्रचार की सम्भावनाएं लगभग असीमित हैं। आप यूहन्ना 14:1-6, 15:1-11 और 17:1-26 जैसे वचनों पर प्रचार कर सकते हैं। आप यूहन्ना 14:6 तथा 16:8 जैसी व्यक्तिगत आयतों पर भी प्रचार कर सकते हैं। सम्पूर्ण अध्याय पवित्र आत्मा की प्रस्तुति के रूप में, विषयात्मक प्रवचनों के लिए उछाल तख्ता उपलब्ध कराते हैं।

टिप्पणियां

[1]आप यहां व्यक्तिगत उदाहरण दें। शायद आप दूसरी जगह जाने के लिए किए जाने वाले प्रबन्धों के बारे में सोच सकते हैं। एक और सम्भावना किसी बड़ी बदली (ट्रांसफर) से पहले किए जाने वाले आम प्रबन्धों पर चर्चा करना है। [2]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 199. [3]जॉन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961) 292. [4]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटेड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1462. [5]''शांति'' जो संसार देता है वह अनुकूल परिस्थितियों पर निर्भर है इसलिए अस्थाई है। यीशु की शांति अनुकूल परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है क्योंकि यह भीतर से आती है इसलिए सदा तक रह सकती है। [6]वास्तव में, वह 99 वर्ष तक जीवित रही। [7]यह प्रतिज्ञा परमेश्वर की आशीष पाने वाला जीवन जीने की शर्त पर है (1 यूहन्ना 3:22) और ''उसकी इच्छा के अनुसार'' (1 यूहन्ना 5:14) मांगने पर है। ''यीशु के नाम में'' प्रार्थना करने पर ज़ोर पूरे नये नियम में रहता है (देखें इफिसियों 5:20; कुलुस्सियों 3:17)। हमें पता होना आवश्यक है कि इसका अर्थ प्रार्थना के अंत में केवल ''यीशु के नाम में'' शब्दों का इस्तेमाल ही नहीं है। बल्कि यीशु के नाम में प्रार्थना करने में इस बात की समझ होना शामिल है कि मसीह कौन है, वह कहां है और वह हमारे लिए क्या कर सकता है। प्रार्थना उसमें अपना विश्वास और भरोसा व्यक्त करना है जो हमारी ओर से विनतियां करता है। [8]यीशु ने यह नहीं बताया कि पवित्र आत्मा के आने से पहले उसका जाना आवश्यक क्यों था। यूहन्ना के सुसमाचार के वृत्तांत में पहले इस प्रेरित ने लिखा है कि ''आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था'' (यूहन्ना 7:39)। किसी कारण आत्मा दिए जाने से पहले यीशु का मरना, जी उठना और परमेश्वर के पास ऊपर उठाया जाना आवश्यक था। शायद महत्वपूर्ण यह है कि आत्मा तब तक आकर मसीह का पूर्ण सुसमाचार प्रकट नहीं कर सकता था जब तक उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना (सुसमाचार की मुख्य बातें; 1 कुरिन्थियों 15:1-4) न हो जाता। [9]आखिर, ''दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं'' (यूहन्ना 13:16)। [10]बहुत से लेखकों का मानना है कि ''बड़े काम'' सुसमाचार का प्रचार और हज़ारों लोगों के मन परिवर्तन की बात है। संदर्भ में, ''कामों'' शब्द का सबसे स्वाभाविक अर्थ ''आश्चर्यकर्म'' है, परन्तु यीशु ने यह संकेत देते हुए कि ''मैंने बड़े-बड़े काम [आश्चर्यकर्म] किए हैं, परन्तु जब तुम आत्माओं को बदलोगे, तो वह उन सभी आश्चर्यकर्मों से जो मैंने किए हैं, बड़ा [अधिक महत्वपूर्ण] काम होगा'' शब्दों का खेल इस्तेमाल किया।

[11]पवित्र आत्मा ने प्रेरितों के साथ उनके जीवन भर रहना था, और वह मसीही लोगों के साथ जगत के अन्त तक रहेगा। [12]यूनानी शब्द का अनुवाद ''परमेश्वरत्व'' परमेश्वर होने की स्थिति या गुणों के लिए है। NASB में इसका अनुवाद ''ईश्वरीय स्वभाव'' या ''Deity'' के रूप में किया गया है। [13]''त्रिएकता'' के लिए इस्तेमाल होने वाला ''Trinity'' एक लातीनी शब्द है, जिसका अर्थ है ''तीन में एक।'' ये शब्द पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा कहने का आसान ढंग हैं। [14]इस शब्द का इस्तेमाल करने वाला यूहन्ना नये नियम का एकमात्र लेखक था। उसने पवित्र आत्मा के लिए यूहन्ना 14-16 में (14:16, 26; 15:26; 16:7) में और 1 यूहन्ना में यीशु के लिए (1 यूहन्ना 2:1) इस्तेमाल किया। [15]यहां इस्तेमाल किए गए अनुवाद हैं, न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल, न्यू किंग जेम्स वर्ज़न, किंग जेम्स वर्ज़न, रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न और न्यू रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न। [16]वे यीशु की उपस्थिति में थे, जो ''पवित्र आत्मा से भरा हुआ'' था (लूका 4:1) और उसने आत्मा से दी गई सामर्थ उन्हें दी थी (मत्ती 10:8)। [17]पवित्र आत्मा हर मसीही में है (प्रेरितों 2:38; 2 तीमुथियुस 1:14), परन्तु वैसे ही नहीं जैसे प्रेरितों में था। उन्हें आत्मा आश्चर्यकर्म के द्वारा दिया गया था (प्रेरितों 2:4; देखें 5:12)। [18]पवित्र आत्मा के कुछ लोगों के लिए ''अज्ञात मात्रा'' में होने का एक कारण यह है कि उसके आने का उद्देश्य अपने आप को ऊंचा करना नहीं था। नये नियम में आत्मा के कई हवाले मिलते हैं, परन्तु उसके बारे में पिता और पुत्र जितनी जानकारी नहीं दी गई। आत्मा के बारे में नया नियम क्या कहता है, इसका अध्ययन करना अच्छा है, परन्तु हमें सावधान रहना चाहिए कि आत्मा कहां अपने ऊपर अधिक ज़ोर नहीं देता, और हमें उसे और उसके काम को पिता और पुत्र से ऊंचा नहीं करना चाहिए। [19]वारेन डब्ल्यू.

वियर्सबे, द *बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 362. [20]KJV यूहन्ना 16:13 का अनुवाद ''वह अपने विषय में न बोलेगा'' है। इस वाक्यांश से यह प्रभाव मिल सकता है कि आत्मा ने अपने बारे में कुछ नहीं कहना था, जो कि वास्तव में ऐसा नहीं है (देखें टिप्पणी 18)। ''अपनी ओर से नहीं'' से वचन अधिक स्पष्ट लगता है।

[21]''पवित्र शास्त्र'' शब्द परमेश्वर के *लिखित* वचन को कहा गया है (देखें 2 पतरस 3:15, 16)। [22]दिए गए किसी हवाले में यीशु के मन में क्या था, बताना आसान नहीं रहता। [23]यीशु इस आयत में जानबूझकर स्पष्ट नहीं था (देखें 16:25), परन्तु यह विचार करके कि वह जी उठने के बाद के अपने दर्शनों की बात कर रहा था ''थोड़ी देर में'' शब्दों का उसका उपयुक्त इस्तेमाल लगता है (16:16-19)। [24]यूहन्ना 15:1-8 पर विस्तृत टिप्पणी तथा प्रासंगिकता के लिए, इस पुस्तक में आगे ''प्रभु के लिए फल लाना'' पाठ देखें। [25]यह यूहन्ना में ''मैं हूं'' के सात वचनों में से अंतिम है। [26]NIV का अनुवाद है ''परमेश्वर में भरोसा रखो; मुझ में भी भरोसा रखो।'' [27]यूहन्ना 14-17 में विश्वास पर अन्य आयतों के लिए, देखें 16:30, 31; 17:8, 20, 21. [28]''फल लाना'' वाक्यांश के अर्थ के सम्बन्ध में, पुस्तक में आगे ''प्रभु के लिए फल लाना'' पाठ देखें। [29]यूहन्ना 14-17 में बल इस बात पर है कि यीशु अपने प्रेरितों को वैसे ही संसार में भेज रहा था, जैसे संसार में उसे भेजा गया था (17:3, 8, 18, 21, 23)-ताकि वे उसकी गवाही दे सकें (15:27)। परन्तु हम इसे अपने ऊपर लागू कर सकते हैं, क्योंकि जिस आज्ञा ने उन्हें संसार में भेजा वही हमारे लिए भी है। (इस शृंखला में आगे मत्ती 28:18-20 पर चर्चा देखें)। [30]निश्चय ही, यीशु का प्रेम इससे बढ़कर था क्योंकि उसने अपने शत्रुओं के लिए भी अपना प्राण दे दिया (रोमियों 5:8-10)।

[31]शाऊल/पौलुस इसका एक उदाहरण हैं। जब वह मसीही लोगों को सता रहा था (प्रेरितों 8:1, 3; 9:1, 2), तो उसे लगता था कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है (प्रेरितों 26:9; गलातियों 1:13, 14)। [32]ये अंग्रेज़ी गीत के अनुवाद ''रब्ब साथ होवे जब हम जुदा हों'' के पहले शब्द हैं। [33]रॉबर्ट डंकन कल्वर, द *लाइफ़ ऑफ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 237. [34]वियर्सबे, 367.